बहुजन हिताय! बहुजन सुखाय!

सक्षम भारत

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक | इन्द्रजीत सिंह, मुख्य संवाददाता/सचिव, CNSI-Delhi

दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, उत्तर प्रदेश से प्रसारित

www.sakshambharat;net, E-mail : saksham.bharat@hotmail.com

Member : CENTRAL NEWSPAPER SOCIETY OF INDIA DELHI

● वर्ष: 24 ● अंक: 129 ● नई दिल्ली ● मंगलवार 03 मार्च 2026 ● प्रभात कालीन ● मूल्य: 3 रूपया ● पृष्ठ: 4

रिपब्लिकन मजदूर संगठन के सदस्य बनें

E-mail : rmsdp@hotmail.com

अनागरिक गीता भारती भवन
बी-2/370, सुल्तानपुरी
दिल्ली-86

एक्सिस बैंक और कई स्कूलों को मिली बम की धमकी, ई-मेल से मचा हड़कंप, जांच में जुटी पुलिस

नई दिल्ली । राजधानी दिल्ली के स्कूलों को बम धमकी के मामले थमने का नाम नहीं ले रहे है। आज एक बार फिर कुछ स्कूलों को ईमेल के जरिए धमकी दी गई है। वहीं, कनॉट प्लेस में एक्सिस बैंक को भी बम की धमकी मिली है। दिल्ली स्थित सरदार पटेल स्कूल, मीरा मॉडल स्कूल समेत कई स्कूलों में आज फिर धमकी भरा ईमेल आया। जिसके बाद बाद हड़कंप मच गया। आनन-फानन में पुलिस को सूचना दी गई और सुरक्षा एजेंसियों की टीमें तुरंत हरकत में आ गईं। स्कूलों में बम निरोधक दस्ते और पुलिस के जवान पहुंच गए है और सघन तलाशी अभियान चलाया जा रहा है। फिलहाल, दिल्ली पुलिस की टीमें और बम निरोधक दस्ता स्कूलों के अंदर और आसपास के इलाकों में तलाशी अभियान चला रहा है।

दिल्ली की बेटियां बनेंगी लखपति- होली से पहले महिलाओं-बेटियों को 4 बड़ी सौगात, राष्ट्रपति ने लॉन्च की योजनाएं

नई दिल्ली । केंद्र सरकार की 'वन नेशन, वन कार्ड' से प्रेरणा लेते हुए दिल्ली की रेखा गुप्ता सरकार राजधानी की महिला निवासियों के लिए नेशनल कॉमन मोबिलिटी कार्ड (एनसीएमसी) की शुरुआत की है. सोमवार 2 मार्च को इंदिरा गांधी इंडोर स्टेडियम में एक विशेष व भव्य कार्यक्रम 'सशक्त नारी समृद्ध दिल्ली' में देश की महामहिम राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने इस महत्वाकांक्षी योजना (पिंक कार्ड) का शुभारंभ किया. मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता का कहना है कि यह कार्ड दिल्ली निवासी महिलाओं को डीटीसी बसों में निःशुल्क यात्रा की सुविधा प्रदान करेगा. साथ ही मेट्रो, रीजनल रैपिड ट्रांजिट सिस्टम (आरआरटीएस) और अन्य सार्वजनिक परिवहन सेवाओं में एक ही स्मार्ट कार्ड के माध्यम से सशुल्क सुविधा देगा. मुख्यमंत्री के अनुसार यह पहल सार्वजनिक परिवहन को अधिक सुलभ, सुरक्षित और डिजिटल बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है. इससे महिलाओं के दैनिक यात्रा खर्च में कमी आएगी और उन्हें शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य तथा सामाजिक अवसरों तक सुगम पहुंच मिलेगी.

तीन तरह के कार्ड जारी होंगे

मुख्यमंत्री ने बताया कि योजना के तहत तीन प्रकार के एनसीएमसी कार्ड जारी किए जाएंगे. पिंक कार्ड दिल्ली निवासी पात्र महिलाओं के लिए होगा, जबकि ब्लू कार्ड सामान्य यात्रियों के लिए और ऑरेंज कार्ड मासिक पास उपयोगकर्ताओं के लिए जारी किया जाएगा. शुरुआती चरण में पिंक और ब्लू कार्ड लॉन्च किए जाएंगे, जिसके बाद ऑरेंज कार्ड लागू किया जाएगा.

उन्होंने बताया कि कार्ड जारी करने के लिए दिल्ली परिवहन निगम (डीटीसी) ने हिंदुजा मर्केंटाइल लिमिटेड (मुफिन्जी) और एयरटेल पेमेंट्स बैंक लिमिटेड को अधिकृत किया है. ये कार्ड दिल्ली की सार्वजनिक परिवहन प्रणाली में पहले से लागू ऑटोमेटिक फेयर कलेक्शन सिस्टम (एएफसीएस) से एकीकृत होंगे. पिंक कार्ड पात्र महिलाओं को पूर्णतः निःशुल्क दिया जाएगा और इसकी संपूर्ण लागत दिल्ली सरकार वहन करेगी.

इन जगहों पर मिलेंगे पिंक कार्ड

मुख्यमंत्री के अनुसार कार्ड जारी करने के लिए लगभग 50 केंद्र स्थापित किए जाएंगे, जिनमें जिला मजिस्ट्रेट (डीएम) और एसडीएम कार्यालयों के साथ-साथ डीटीसी के चयनित केंद्र शामिल होंगे. यह कार्ड न्यूनतम दस्तावेजों के आधार पर किया जाएगा ताकि प्रक्रिया सरल, तेज और पारदर्शी रहे. प्रत्येक पिंक कार्ड लाभार्थी के मोबाइल नंबर और आधार से लिंक किया जाएगा. आधार के माध्यम से प्रमाणीकरण कर आयु (5 वर्ष से अधिक), लिंग (महिला) और दिल्ली निवास (दिल्ली पिन कोड के आधार पर) की पुष्टि की जाएगी, जिससे पात्रता सुनिश्चित होगी और डुप्लिकेशन रोका जा सकेगा.

टिकट की जगह लेगा पिंक कार्ड

यह एक टच-फ्री और सुरक्षित स्मार्ट कार्ड होगा. इससे हर यात्रा का सही डिजिटल रिकॉर्ड रखा जाएगा. नकद लेन-देन कम होगा और आय का हिसाब-किताब अधिक साफ और पारदर्शी रहेगा. यात्रा के आंकड़ों की मदद से बस रूट तय करने, बसों की संख्या सही करने और बेहतर फैसले लेने में आसानी होगी. यही कार्ड पिंक पेपर टिकट की जगह लेगा, जिससे पूरी व्यवस्था ज्यादा आसान और आधुनिक बन जाएगी.

पब्लिक ट्रांसपोर्ट की दिशा में मील का पत्थर

मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने कहा कि यह पहल माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के 'डिजिटल इंडिया' और 'वन नेशन, वन कार्ड' के विजन से प्रेरित है और दिल्ली में एकीकृत, आधुनिक एवं महिला-केंद्रित सार्वजनिक परिवहन प्रणाली स्थापित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है. योजना के शुभारंभ अवसर पर चयनित पात्र महिला लाभार्थियों को औपचारिक रूप से पिंक एनसीएमसी कार्ड वितरित किए जाएंगे. यह पहल दिल्ली में आधुनिक, डिजिटल और समावेशी सार्वजनिक परिवहन व्यवस्था की दिशा में महत्वपूर्ण मील का पत्थर सिद्ध होगी.

महिलाओं और बालिकाओं के आर्थिक सशक्तिकरण की दिशा में दिल्ली सरकार की एक महत्वपूर्ण योजना पर आधिकारिक मुहर लगने जा रही है. सोमवार 2 मार्च को इंदिरा गांधी इंडोर स्टेडियम में एक विशेष व भव्य कार्यक्रम 'सशक्त नारी समृद्ध दिल्ली' आयोजित किया जाएगा. समारोह में देश की महामहिम राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु दिल्ली सरकार की महत्वाकांक्षी 'दिल्ली लखपति बिटिया योजना' का औपचारिक शुभारंभ करेंगी. मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता का कहना है कि यह कार्यक्रम महिला सशक्तिकरण के प्रति दिल्ली सरकार की प्रतिबद्धता का प्रतीक है. यह कार्यक्रम महिला एवं बाल विकास विभाग की ओर से आयोजित किया जा रहा है.

ऐसे बनेगी बिटिया लखपति

मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने बताया कि बदलते समय और उच्च शिक्षा की बढ़ती लागत को देखते हुए बालिकाओं के लिए प्रभावी और भविष्योन्मुखी योजना बनाने की आवश्यकता थी. इसी सोच के साथ लाडली योजना को विस्तारित और सुदृढ़ रूप में 'दिल्ली लखपति बिटिया योजना' के रूप में पुनर्गठित किया गया है. उन्होंने कहा कि पूर्व संरचना के अंतर्गत प्रत्येक पात्र बालिका के नाम पर संस्थागत जन्म होने पर 11,000 रुपये और घरेलू जन्म होने पर 10,000 रुपये जमा किए जाते थे. इसके अतिरिक्त कक्षा एक, छह और नौवीं में प्रवेश, कक्षा दसवीं उत्तीर्ण करने तथा कक्षा बारह में प्रवेश जैसे महत्वपूर्ण शैक्षणिक पड़ावों पर 5,000 रुपये की राशि जमा की जाती थी. यह संचित राशि ब्याज सहित 18 वर्ष की आयु में निकाली जा सकती थी. मुख्यमंत्री ने स्पष्ट किया कि नई योजना में सहायता की राशि और दृष्टिकोण दोनों को व्यापक रूप से बढ़ाया गया है. अब बालिका के नाम पर विभिन्न चरणों में कुल 56,000 रुपये जमा किए जाएंगे और ब्याज सहित 21 वर्ष की आयु तक यह परिपक्वता मूल्य 1 लाख रुपये से अधिक होने की उम्मीद है. इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि स्नातक या व्यावसायिक डिप्लोमा पूरा करना अपवाद नहीं बल्कि सामान्य उपलब्धि बने.

डिजिटल और पारदर्शी व्यवस्था

नई योजना पूरी तरह डिजिटल होगी. फंड का प्रबंधन एसबीआई लाइफ इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड द्वारा किया जाएगा और निवेश एसबीआई लाइफ धनराशि साधन के अंतर्गत होगा. विभाग द्वारा जमा की गई राशि बालिका की उम्र के साथ बढ़ती रहेगी और परिपक्वता पर पूरी संचित राशि सीधे लाभार्थी के आधार से जुड़े बैंक खाते में ट्रांसफर कर दी जाएगी. इससे पारदर्शिता और प्रत्यक्ष वित्तीय समावेशन सुनिश्चित होगा.

पात्रता और विस्तारित दायरा

योजना का लाभ उन्हीं परिवारों को मिलेगा जिनकी वार्षिक आय 1.20 लाख रुपये से अधिक न हो तथा जो पिछले तीन वर्षों से दिल्ली में रह रहे हों. बालिका का जन्म दिल्ली में होना अनिवार्य है. पंजीकरण जन्म के एक वर्ष के भीतर या निर्धारित शैक्षणिक पड़ावों पर कराया जा सकता है. यह लाभ प्रति परिवार दो जीवित बालिकाओं तक सीमित रहेगा. महत्वपूर्ण रूप से योजना का दायरा बढ़ाकर भारत में किसी भी सरकारी मान्यता प्राप्त या यूजीसी मान्यता प्राप्त संस्थान में स्नातक या व्यावसायिक डिप्लोमा पाठ्यक्रम कर रही लड़कियों को शामिल किया गया है. परिपक्वता लाभ केवल शैक्षणिक शर्तों की पूर्ति पर ही देय होगा.

प्रधानमंत्री का विजन और मुख्यमंत्री की प्रतिबद्धता

मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने कहा कि यह योजना माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के उस व्यापक विजन से प्रेरित है जिसमें बेटियों को शिक्षा, सम्मान और आत्मनिर्भरता के माध्यम से राष्ट्र निर्माण की धुरी बनाया गया है. उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री का स्पष्ट संदेश है कि जब बेटी शिक्षित और सशक्त होगी, तभी समाज और राष्ट्र समृद्ध होगा. मुख्यमंत्री ने विश्वास व्यक्त किया कि 'दिल्ली लखपति बिटिया योजना' केवल आर्थिक सहायता नहीं बल्कि बेटियों के आत्मविश्वास, उच्च शिक्षा और सुरक्षित भविष्य की गारंटी बनेगी. उन्होंने बताया कि दिल्ली सरकार का लक्ष्य है कि राजधानी की प्रत्येक योग्य बालिका को ऐसा अवसर मिले जिससे वह अपने सपनों को साकार कर सके और आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में सक्रिय भागीदारी निभा सके.

खतरा

इजराइल और अमेरिका द्वारा मिल कर ईरान के विरुद्ध छेड़े गये युद्ध से अब पूरी दुनिया में भारी अफरा-तफरी की आशंका पैदा होती जा रही है और ऐसा लग रहा है कि विश्व के विभिन्न देशों की सबसे बड़ी पंचायत 'संयुक्त राष्ट्रसंघ' एक मूकदर्शक बन चुकी है। जिस प्रकार इजराइली-अमेरिकी हमले में ईरान के सर्वोच्च नेता आयतुल्लाह सैयद अली खामेनेई की हत्या की गई है उसे किसी भी रूप में स्वीकार नहीं किया जा सकता है, क्योंकि यह ईरान के लोगों द्वारा अपने लिए चुनी गई शासन व्यवस्था पर विदेशी आक्रमण है। श्री खामेनेई की हत्या के बाद ईरान के लोगों का गुस्सा फूट पड़ा है और वे सड़कों पर निकल कर अमेरिका से बदला लेने की मांग कर रहे हैं। भारत शुरू से ही यह मानता रहा है कि किसी भी देश में किस प्रकार की शासन व्यवस्था काबिज हो, इसका फैसला सिर्फ उस देश की जनता को ही करने का अधिकार होता है। अतः ईरान में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प जिस तरह सत्ता परिवर्तन को इस युद्ध का ध्येय बता रहे है उसका कोई औचित्य नहीं है लेकिन ईरान में अमेरिकी कार्रवाई के बाद पश्चिम एशिया के मुस्लिम देशों से प्रतिक्रिया प्राप्त हो रही है जो इस पूरे क्षेत्र को स्थिरता और सौहार्दता के माहौल के लिए खतरा पैदा करती है। श्री खामेनेई पूरी दुनिया के शिया मुस्लिम सम्प्रदाय के लोगों के नेता भी माने जाते थे अतः उनकी हत्या के बाद कई मुस्लिम देशों में लोग सड़कों पर उतर कर विरोध-प्रदर्शन भी कर रहे हैं। इसका प्रभाव भारतीय उपमहाद्वीप के देशों तक पर पड़ा है, मगर असली सवाल यह है कि क्या यह युद्ध जल्दी ही समाप्त हो जायेगा अथवा लम्बे समय तक खिंचेगा इस सन्दर्भ में हमें इस तथ्य पर गौर करना होगा कि ईरान की सैन्य क्षमता कितनी है और उसके समर्थन में कौन-कौन सी विश्व शक्तियां खड़ी हुई है इस मामले में रूस व चीन का नाम लिया जा सकता है क्योंकि ये दोनों देश ही आर्थिक व सैनिक रूप से ईरान के सहयोगी रहे है परन्तु इसके साथ यह भी देखना होगा कि इन दोनों देशों के पश्चिम एशिया में अपने-अपने हित किस प्रकार सधते है। इस क्षेत्र के अधिकतम मुस्लिम देशों के शासक अमेरिका परस्त माने जाते हैं जिसकी वजह से इस क्षेत्र के पूरे समुद्री इलाके में अमेरिकी जंगी जहाजी बेड़ों का पूरा काफिला तैनात रहता है तथा जमीन पर इनमें से अधिसंख्य में अमेरिकी सैनिक अड्डे है। अतः ईरान ने पलटवार करते हुए सबसे पहले इन्हीं सैनिक अड्डों को अपना निशाना बनाया है। उसने अभी तक बहरीन, कतर , संयुक्त अरब अमीरात, सऊदी अरब व जोर्डन स्थित अमेरिकी सैनिक अड्डों पर हमले करके उन्हें तहस-नहस करने का प्रयास इसीलिए किया है जिससे उसके इजराइल पर किये जाने वाले हमलों में किसी प्रकार का अवरोध पैदा न हो। इससे लगता है कि ईरान को अमेरिका की मंशा पर पहले से ही अन्देशा था और वह जानता था कि अमेरिका उसे बातचीत में उलझा कर अचानक हमला बोल सकता है। उसकी यह रणनीति पिछले वर्ष इजराइल से चली 12 रोजा जंग के बिल्कुल विपरीत है। पिछले वर्ष ईरान ने इजराइल पर जो मिजाइल हमले किये थे उन्हें बीच में ही इन अड्डों से प्रतिरोधी अस्त्र चला कर बड़ी हद तक नाकामयाब कर दिया जाता था। ईरान की सबसे बड़ी सैन्य ताकत उसका अत्याधुनिक मिजाइल जखीरा है जो उसे रूस व चीन के सहयोग से प्राप्त हुआ है। उसके पास ड्रोन आक्रमण की क्षमता भी अद्भुत है मगर इनके भरोसे वह अमेरिका जैसी महाशक्ति से पार नहीं पा सकता है, अतः संभावना यह व्यक्त की जा रही है कि उसकी मदद के लिए कहीं रूस व चीन न कूद पड़े। यदि ऐसा होता है तो इस युद्ध के विश्व युद्ध में बदलने की संभावना से भी इन्कार नहीं किया जा सकता। अमेरिका ईरान के परमाणु कार्यक्रम को लेकर पिछले कई वर्षों से उसके खिलाफ मुहीम छेड़े हुए है और वह नहीं चाहता कि ईरान किसी भी सूरत में परमाणु बम बनाये। इसके चलते पिछले लगभग डेढ़ दशक से अमेरिका ने ईरान पर विविध आर्थिक प्रतिबन्ध भी लगाये हुए है। दूसरी तरफ ईरान का कहना रहा है कि उसका परमाणु कार्यक्रम केवल शान्तिपूर्ण विकास के लिए ही है जिसे करने का उसे पूरा हक है। इसी मुद्दे पर अमेरिका व ईरान के बीच पिछले दिनों से वार्तालाप भी चल रही थी जिसकी मध्यस्थता ओमान कर रहा था। इस सन्दर्भ में ईरान इस बात के लिए भी राजी हुआ कि उसके परमाणु कार्यक्रम का निरीक्षण अन्तर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी भी करे मगर उसे यूरेनियम परिशोधन करने से नहीं रोका जा सकता। यह भी पूरी दुनिया जानती है कि ईरान अपना परमाणु कार्यक्रम रूस के सहयोग से ही कर रहा था लेकिन अमेरिका ने ओमान की मध्यस्थता में चल रही शान्ति वार्ता के दौरान ही इजराइल के साथ मिलकर हमला कर दिया और इसके सर्वोच्च नेता खामेनेई के साथ ही इसके रक्षामन्त्री व फौजी कमांडर को भी निशाना बना डाला। जाहिर है कि यह स्थिति किसी भी स्वयंभू राष्ट्र की अस्मिता के लिए चुनौती के समान ही होगी अतः ईरान अब जवाबी हमलों पर अपनी ताकत झौंक रहा है। जहां तक भारत का सवाल है तो इसकी नीति आजादी के बाद से ही युद्ध विरोधी रही है और यह हर समस्या का हल केवल बातचीत के द्वारा निपटाने का ही हिमायती रहा है। दूसरी तरफ डोनाल्ड ट्रम्प का मानना है कि उन्हें ईरान में सत्ता बदलने का भी अधिकार है। जहां तक इजराइल का सवाल है तो 1992 के बाद से इस देश के साथ भारत के सम्बन्ध बहुत सुधरे है और यह इजराइली आयुध सामग्री का बहुत बड़ा खरीदार होने के साथ इसका रणनीतिक मित्र भी है परन्तु भारत फिलिस्तीन के पक्ष में भी प्रारम्भ से ही खड़ा रहा है और मानता है कि अरब की फिलिस्तीनी धरती पर इजराइल व फिलिस्तीन दोनों देशों का अस्तित्व बना रहना चाहिए। अतः विदेश मन्त्री एस. जयशंकर ने कल दोनों ही देशों के विदेश मन्त्रियों से फोन पर बातचीत करके कहा कि मामले को बातचीत की मेज पर बैठकर ही सुलझाया जाना चाहिए लेकिन ईरान के साथ भारत के विशिष्ट ऐतिहासिक व सांस्कृतिक सम्बन्ध रहे है जिन्हें नजरन्दाज नहीं किया जा सकता।

काठमांडौ बनाम दिल्ली !

काठमांडौ उस देश की राजधानी है जो आर्थिक प्रगति में भारत से कहीं पीछे है। पर इस मायने में भारत की राजधानी दिल्ली से कहीं आगे है। सारे शहर की सड़कें और फुटपाथ बिल्कुल साफ़ है, जहां हर वक्त सफ़ाईकर्मी मुस्तैदी से डटे रहते है। ऐसा लगता है कि मोदी जी का 'स्वच्छ भारत अभियान' भारत के लिए नहीं बल्कि नेपाल के लिए था। क्योंकि भारत की राजधानी दिल्ली में तो जहां निगाह डालिये वहीं कूड़े के अंबार लगे पड़े है। यही हाल काठमांडी शहर के सार्वजनिक शौचालयों का भी है। जो इतने साफ़ रहते है कि आश्चर्य होता है कि मानो किसी व्यावसायिक प्रतिष्ठान के शौचालय हों। दूसरी ओर दिल्ली के ज़्यादातर सार्वजनिक शौचालयों की हालत इतनी खराब है कि आसानी से घुसने की हिम्मत नहीं पड़ती।

काठमांडी की एक और खासियत ने पिछले तीन दिनों में मेरा ध्यान आकर्षित किया। वो है यहां की ट्रैफ़िक व्यवस्था। सभी व्यस्त सड़कों पर महिला और पुरुष पुलिसकर्मी सतर्क और सक्रिय रह कर ट्रैफ़िक नियंत्रित करते है। इतना ही नहीं यहां के नागरिक भी ट्रैफ़िक नियमों का ज़िम्मेदारी से पालन करते है। सबसे ज़्यादा प्रभावित करने वाली बात तो यह थी कि काठमांडी की सड़कों पर गाड़ियों के हॉर्न का कर्कश शोर बिल्कुल भी सुनाई नहीं देता। यहां के ट्रैफ़िक नियमों के अनुसार आपातकालीन स्थिति को छोड़कर सामान्य स्थिति में हॉर्न बजाना वर्जित है और इस नियम को न मानने पर जुर्माना ठोक दिया जाता है। इससे काठमांडी में ध्वनि प्रदूषण की कोई समस्या नहीं है। इसके साथ ही वायु प्रदूषण की तो यहां कोई समस्या ही नहीं है। जहां दिल्ली में एक्यूआई की मात्रा 400 तक पहुंच जाती है वहां काठमांडी का एक्यूआई नगण्य है। हालांकि इसके कई कारण है, एक तो काठमांडी एक घाटी में बसा है और चारों ओर पहाड़ों से घिरा है। दूसरा यहां की आबादी बहुत कम है और कारखानों की संख्या भी उतनी ज़्यादा नहीं। इसलिए वायु प्रदूषण की दिल्ली के साथ तुलना को छोड़ा भी जा सकता है परंतु ऐसे कई अन्य कारण भी है जो काठमांडी को दिल्ली से बेहतर बनाते है। मिसाल के तौर पर यहां कानून व्यवस्था, दिल्ली की तुलना में काफ़ी व्यवस्थित है। यहां के नागरिक बताते है कि आधी रात को भी यहां महिलाएं बेहिचक अकेली निकल सकती है। किसी भी तरह की छीना-झपटी नहीं होती। न ही महिलाओं के साथ किसी भी तरह की छेड़छाड़ होती है। काठमांडी और नेपाल में कई विश्व प्रसिद्ध मंदिर भी है और पर्यटन को भी अनेकों जगह है। यहां जाने पर भी पर्यटकों और तीर्थयात्रियों के साथ किसी भी तरह का छल-कपट और नाजायज़ उगाही नहीं की जाती। प्रशासन की तरफ़ से जो भी कर्मचारी तैनात किए जाते है वो पर्यटकों की हर संभव सहायता करते दिखाई देते है। 'स्वच्छ भारत अभियान' हो या कोई अन्य अभियान, किसी भी अभियान को प्रचारित करना आसान होता है, जो कि अखबारों और टीवी विज्ञापनों के ज़रिए किया जा सकता है, पर उस अभियान की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि देश की जनता ने उसे किस सीमा तक आत्मसात किया। अब मोदी जी के 'स्वच्छ भारत अभियान' को ही ले लीजिए। जितना इस अभियान का शोर मचा और प्रचार हुआ उसका 5 फ़ीसदी भी धरातल पर नहीं उतरा। भारत के किसी भी छोटे-बड़े शहर, गांव या कस्बे में चले जाइए तो आपको गंदगी के अंबार पड़े दिखाई देंगे, इसलिए इस अभियान का निकट भविष्य में भी सफल होना संभव नहीं लगता, क्योंकि जमीनी चुनौतियां वो की त्यों बनी हुई है। स्वदेशी अभियान की सफलता भी जन-जागरण, सतत् निगरानी और व्यवहार परिवर्तन पर निर्भर करती है। अगर आम नागरिक इसमें सक्रिय भूमिका निभाएं तभी यह आंदोलन सफल होगा। निसंदेह 'स्वच्छ भारत अभियान' मोदी जी की एक प्रशंसनीय पहल थी। पहली बार किसी प्रधानमंत्री ने हमारे चारों ओर दिनों-दिन जमा होते जा रहे कूड़े के ढेरों की बढ़ती समस्या के निस्तारण का एक देशव्यापी अभियान छेड़ा था।

उस समय बहुत से नेताओं, फिल्मी सितारों, मशहूर खिलाड़ियों व उद्योगपतियों तक ने हाथ में झाड़ू पकड़ कर फ़ोटो खिंचवा कर इस अभियान का श्रीगणेश किया था। पर सोचें आज हम कहां खड़े है शहरों और ग्रामीण क्षेत्रों में स्थाई सफाई-व्यवस्था बनाना अब भी एक बड़ी चुनौती है। कचरा पृथक्करण, पुनः उपयोग और रीसाइक्लिंग की जागरूकता में अपेक्षाकृत कमी दिखती है। कुछ जगहों पर शौचालयों के रखरखाव, जल आपूर्ति और व्यवहार परिवर्तन को लेकर समस्याएं बनी हुई है, इसलिए अभियान के उद्देश्य और जमीनी सच्चाई में अंतर बना हुआ है और अनेक स्थानों पर पुराने तरीकों का पालन अब भी हो रहा है। दिल्ली हो या देश का कोई अन्य शहर यदि कहीं भी एक औचक निरीक्षण किया जाए तो स्वच्छ भारत अभियान की सफलता का पता चल जाएगा। यदि इतने बड़े स्तर पर शुरू किए गए अभियान की सफलता अगर काफ़ी कम पाई जाती है तो इसके लिए कौन जिम्मेदार है निसंदेह स्थानीय निकाय जिम्मेदार है किंतु हम सब नागरिक भी कम जिम्मेदार नहीं है। उल्लेखनीय है कि यदि हम नागरिक किसी साफ़-सुथरे मॉल या अन्य स्थान पर जाते है तो सभी नियमों का पालन करते है। कचरे को केवल कूड़ेदान में ही डालते है। इस तरह हम एक साफ़-सुथरी जगह को साफ़ रखने में सहयोग अवश्य देते है लेकिन ऐसा क्या कारण है कि जहां किसी नियम को सख्ती से लागू किया जाता है तो हम पूरा सहयोग देते है परंतु जहां कहीं भी किसी नियम को लागू करने में एजेंसियां ढिलाई बरतती है या हमारे विवेक पर छोड़ देती है तो आम नागरिक भी उसे हल्के में ले लेता है।

भाजपा या अन्य दलों के नेताओं, कार्यकर्ताओं, स्थानीय निकायों और हम सब आम नागरिकों को भी भारत को कचरा मुक्त देश बनाने के लिए अब कमर कसनी होगी, क्योंकि ये कार्य केवल नारों और विज्ञापनों से नहीं हो पाएगा। आश्चर्य की बात तो यह है कि हम सब जानते है कि लगातार कचरे के ढेरों का हमारे परिवेश में चारों तरफ़ बढ़ते जाना हमारे व हमारी आने वाली पीढ़ियों के स्वास्थ्य के लिए कितना खतरनाक है फिर भी हम सब निष्क्रिय बैठे है। हमें जागना होगा और इस समस्या से निपटने के लिए सक्रिय होना होगा, इसलिए नारे चाहे 'स्वच्छता' के लगें या 'स्वदेशी' के, जनता की भागीदारी के बिना, नारे-नारे ही रहेंगे।

सम्पादकीय...

होली-परंपरा

होली भारतवर्ष का एक अत्यंत प्राचीन, सांस्कृतिक और लोकआस्था से जुड़ा हुआ पर्व है, जिसे पूरे देश में अत्यधिक धूमधाम, उत्साह और हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। यह पर्व हिन्दू पंचांग के अनुसार फाल्गुन मास की शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा को मनाया जाता है। ऋतु परिवर्तन के इस समय में जब शीत ऋतु विदा लेती है और वसंत का आगमन होता है, प्रकृति स्वयं रंग-बिरंगे पुष्पों से सुसज्जित हो जाती है। मानो प्रकृति भी रंगों के इस उत्सव का स्वागत कर रही हो। होली का पर्व परंपरागत रूप से दो दिनों तक मनाया जाता है। पहले दिन फाल्गुन पूर्णिमा को होलिका दहन किया जाता है। इस दिन लोग लकड़ियों, उपलों और सूखी टहनियों को एकत्रित कर निर्धारित स्थान पर होली की स्थापना करते हैं। संध्या के समय विधिवत पूजा-अर्चना कर होलिका दहन किया जाता है। यह दहन बुराई पर अच्छाई की विजय का प्रतीक है। प्राचीन कथा के अनुसार भक्त प्रह्लाद की रक्षा और होलिका के दहन की स्मृति में यह परंपरा निभाई जाती है। होलिका की अग्नि के चारों ओर परिक्रमा कर लोग अपने परिवार की सुख-समृद्धि, आरोग्यता और मंगलकामना की प्रार्थना करते हैं। उत्तर भारत में इस अवसर पर गेहूं की बालियों को अग्नि में भूनकर खाने की परंपरा भी है, जो नई फसल के स्वागत का प्रतीक मानी जाती है। दूसरे दिन चैत्र मास के कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा को धुलेंडी अथवा रंगों वाली होली खेली जाती है। इस दिन प्रातःकाल से ही लोग एक-दूसरे के घर जाकर अबीर-गुलाल लगाते हैं। छोटे-बड़े का भेद मिटाकर सब एक-दूसरे को रंगते हैं और आशीर्वाद लेते हैं। गली-मोहल्लों में ढोल-नगाड़ों की थाप पर फाग गीत गाए जाते हैं, नृत्य होता है और वातावरण पूरी तरह रंगमय हो जाता है। लोग रंग, गुलाल और पिचकारी से एक-दूसरे को सराबोर कर देते हैं। दोपहर तक रंगों की मस्ती चलती है, तत्पश्चात लोग स्नान कर नए वस्त्र धारण करते हैं और सायंकाल आपसी मेल-मिलाप का क्रम प्रारंभ होता है। घर-घर जाकर गुजिया, मठरी, दहीबड़े और अन्य पारंपरिक व्यंजन खिलाए जाते हैं। इस प्रकार होली केवल रंगों का ही नहीं, बल्कि प्रेम, अपनत्व और सामाजिक एकता का भी पर्व बन जाती है। यदि ब्रज की होली की चर्चा की जाए तो उसका स्वरूप अत्यंत विशिष्ट और विश्वविख्यात है। ब्रज क्षेत्र में होली का उत्सव वसंत पंचमी से ही आरंभ हो जाता है। वसंत पंचमी के दिन मंदिरों और चौराहों पर होली का प्रतीक स्थापित कर लगभग 45 दिनों तक फाग और रसिया के पारंपरिक गीत गाए जाते हैं। ब्रज की महारानी राधा जी की नगरी बरसाना में होली से पूर्व लड्डू मार होली और उसके बाद लठमार होली का आयोजन होता है। लठमार होली विशेष रूप से प्रसिद्ध है, जिसमें बरसाना की महिलाएँ (हुरियारिनें) नंदगांव से आए पुरुषों (हुरियारों) पर प्रतीकात्मक रूप से लाठियाँ चलाती है और पुरुष ढाल से अपना बचाव करते है। यह परंपरा नंदगांव और बरसाना के बीच सदियों से चली आ रही है। इस अनोखी परंपरा को देखने देश-विदेश से हजारों पर्यटक आते हैं। ब्रज की यह होली भक्ति, प्रेम और श्रीराधा-कृष्ण की लीलाओं से ओत-प्रोत होती है, जो इसे आध्यात्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से अत्यंत समृद्ध बनाती है। होली केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि सामाजिक समरसता और भाईचारे का सशक्त माध्यम है।

हॉर्मुज की घेराबंदी- भारत की ऊर्जा सुरक्षा पर मंडराता संकट

पश्चिम एशिया में ईरान, इजरायल और अमेरिका के बीच भड़के भीषण सैन्य टकराव ने पूरी दुनिया की अर्थव्यवस्था को झकझोर दिया है। 1 मार्च 2026 की स्थिति में, ईरान के सर्वोच्च नेता आयतुल्लाह अली खामेनेई के निधन की खबरों ने आग में घी का काम किया है। ईरान के भीतर संभावित सत्ता संघर्ष और बाहरी हमलों ने ऊर्जा आपूर्ति, समुद्री व्यापार मार्गों और वित्तीय व्यवस्थाओं को वैश्विक अस्थिरता के चरम पर पहुँचा दिया है। भारत, जो अपनी ऊर्जा आवश्यकताओं के लिए आयात पर अत्यधिक निर्भर है, इस संकट के सबसे संवेदनशील दौर में है। सामरिक दृष्टि से हॉर्मुज की संकीर्णता ही इसकी सबसे बड़ी शक्ति और कमजोरी है। मात्र 33 किलोमीटर चौड़े इस मार्ग के अवरुद्ध होने से ओमान और ईरान के बीच का समुद्री यातायात ठप हो सकता है। ईरान इसे एक भू-राजनीतिक ढाल के रूप में उपयोग करता है, जिससे वह वैश्विक महाशक्तियों पर दबाव बना सके। भारत के लिए इस मार्ग की सुरक्षा केवल व्यापारिक ही नहीं, बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा का विषय है, क्योंकि यहाँ से होने वाली किसी भी बड़ी बाधा का सीधा असर हमारी औद्योगिक गति और परिवहन व्यवस्था पर पड़ेगा। खामेनेई के बाद ईरान में उपजी अनिश्चितता के बीच, ईरानी रिवोल्यूशनरी गार्ड्स द्वारा हॉर्मुज जलडमरूमध्य पर नियंत्रण और सख्त करने की आशंका बढ़ गई है। यह संकरा समुद्री मार्ग विश्व के समुद्री तेल व्यापार का लगभग एक-तिहाई हिस्सा वहन करता है। भारत के लिए यह मार्ग एक ऊर्जा जीवनरेखा है क्योंकि हमारा 60 प्रतिशत गैस और आधा कच्चा तेल यहीं से आता है। यदि यह मार्ग पूरी तरह अवरुद्ध होता है, तो वैश्विक बाजार में कच्चे तेल की कीमतें 150 डॉलर प्रति बैरल के मनोवैज्ञानिक स्तर को भी पार कर सकती हैं।

कच्चे तेल में युद्ध और अनिश्चितता का उछाल

संघर्ष और ईरान में नेतृत्व के शून्य से ब्रेंट क्रूड में 10 से 15 प्रतिशत का तात्कालिक उछाल देखा गया है। बाजार में इसे अनिश्चितता का अतिरिक्त मूल्य कहा जा रहा है। भारत के लिए हर डॉलर की वृद्धि विदेशी मुद्रा भंडार पर भारी दबाव डाल रही है। रुपये की कमजोरी (88 रुपये प्रति डॉलर के पार) इस मार को और घातक बना रही है, जिससे पेट्रोल-डीजल की कीमतें घरेलू बाजार में 130 रुपये प्रति लीटर तक पहुँचने का खतरा पैदा हो गया है। आंकड़ों के अनुसार, कच्चे तेल की कीमतों में प्रति बैरल एक डॉलर की वृद्धि भारत के वार्षिक आयात बिल में लगभग 10,000 करोड़ रुपये का बोझ बढ़ा देती है। यदि कीमतें 120 डॉलर के पार स्थिर रहती है, तो भारत का चालू खाता घाटा सकल घरेलू उत्पाद के 3 प्रतिशत के खतरनाक स्तर को पार कर सकता है। इसके अतिरिक्त, तेल विपणन कंपनियों का अंडर-रिकवरी बोझ बढ़ने से सरकारी राजकोषीय घाटे पर भी सीधा प्रहार होगा, जो अंततः विकास योजनाओं के बजट में कटौती का कारण बन सकता है।

भारत का सुरक्षा कवच- 74 दिनों की आकस्मिक योजना

इस भयावह स्थिति से निपटने के लिए भारत ने अपनी आकस्मिक ऊर्जा योजना सक्रिय कर दी है। जहाँ अल्पकालिक संकट के लिए रणनीतिक पेट्रोलियम भंडार सीमित नजर आते है, वहीं भारत की कुल भंडारण क्षमता अब एक अभेद्य ढाल के रूप में उभरी है। वर्तमान में विशाखापत्तनम, मंगलुरु और पादुर के भूमिगत रणनीतिक भंडारों में लगभग 9.5 दिनों का कच्चा तेल आपात स्थिति के लिए सुरक्षित है। इसके अतिरिक्त, देश की प्रमुख तेल शोधनशालाओं (रिफाइनरियों) जैसे IOC, HPCL और BPCL के पास लगभग 64.5 दिनों का कच्चा तेल और तैयार उत्पादों का भंडार सदैव मौजूद रहता है। इस प्रकार, रणनीतिक और शोधनशाला भंडारों को मिलाकर भारत के पास लगभग 74 दिनों का कुल तेल भंडार उपलब्ध है।

यह विशाल सुरक्षा चक्र सरकार को युद्ध जैसे संकट के समय वैकल्पिक मार्गों, जैसे रूस या अफ्रीकी देशों से तेल की नई व्यवस्था करने के लिए दो महीने से भी अधिक का बहुमूल्य समय प्रदान करता है।

भविष्य की तैयारी- रणनीतिक भंडार का विस्तार

किसी भी वैश्विक युद्ध या आपूर्ति बाधित होने की स्थिति में रणनीतिक पेट्रोलियम भंडार भारत की जीवनरेखा है। वर्तमान में प्रथम चरण के तहत विशाखापत्तनम, मंगलुरु और पादुर (कर्नाटक) में विशाल भूमिगत चट्टानी गुफाओं में लगभग 5.33 मिलियन मीट्रिक टन कच्चा तेल सुरक्षित है, जो करीब 9.5 दिनों की आवश्यकता पूरी करता है। संकट की गंभीरता को देखते हुए सरकार दूसरे चरण के अंतर्गत ओड़िशा के चंडीखोल और पादुर में अतिरिक्त भंडार बना रही है। रिफाइनरी स्टॉक्स को मिलाकर भारत के पास कुल 74 दिनों का तेल बैकअप है, जो खाड़ी देशों में अस्थिरता के समय देश की अर्थव्यवस्था को ऊर्जा आघात से बचाने के लिए एक अनिवार्य सुरक्षा ढाल है। पश्चिम एशिया का यह संकट भारत के लिए एक कड़वी चेतावनी है। खामेनेई के बाद का ईरान और हॉर्मुज की घेराबंदी भारत की ऊर्जा नीति की सबसे बड़ी परीक्षा है। हालांकि, 74 दिनों का भंडार हमें कुछ समय की सुरक्षा देता है, लेकिन दीर्घकालिक समाधान केवल आयात पर निर्भरता घटाने और स्वदेशी ऊर्जा स्रोतों को सशक्त बनाने में ही निहित है। यह समय केवल आर्थिक प्रबंधन का नहीं, बल्कि सामरिक दूरदर्शिता का है।

भारत, जो अपनी ऊर्जा आवश्यकताओं के लिए आयात पर अत्यधिक निर्भर है, इस संकट के सबसे संवेदनशील दौर में है। सामरिक दृष्टि से हॉर्मुज की संकीर्णता ही इसकी सबसे बड़ी शक्ति और कमजोरी है। मात्र 33 किलोमीटर चौड़े इस मार्ग के अवरुद्ध होने से ओमान और ईरान के बीच का समुद्री यातायात ठप हो सकता है। ईरान इसे एक भू-राजनीतिक ढाल के रूप में उपयोग करता है, जिससे वह वैश्विक महाशक्तियों पर दबाव बना सके। भारत के लिए इस मार्ग की सुरक्षा केवल व्यापारिक ही नहीं, बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा का विषय है, क्योंकि यहाँ से होने वाली किसी भी बड़ी बाधा का सीधा असर हमारी औद्योगिक गति और परिवहन व्यवस्था पर पड़ेगा। खामेनेई के बाद ईरान में उपजी अनिश्चितता के बीच, ईरानी रिवोल्यूशनरी गार्ड्स द्वारा हॉर्मुज जलडमरूमध्य पर नियंत्रण और सख्त करने की आशंका बढ़ गई है। यह संकरा समुद्री मार्ग विश्व के समुद्री तेल व्यापार का लगभग एक-तिहाई हिस्सा वहन करता है। भारत के लिए यह मार्ग एक ऊर्जा जीवनरेखा है क्योंकि हमारा 60 प्रतिशत गैस और आधा कच्चा तेल यहीं से आता है। यदि यह मार्ग पूरी तरह अवरुद्ध होता है, तो वैश्विक बाजार में कच्चे तेल की कीमतें 150 डॉलर प्रति बैरल के मनोवैज्ञानिक स्तर को भी पार कर सकती है।

लाल किले का वो आखिरी मुशायरा

वह 27 अक्तूबर वर्ष 1851 की शाम थी जब लाल किले के उस अंतिम मुशायरे में शिरकत करने वालों में मोमिन खां 'मोमिन', मौलाना अल्ताफ हुसैन हाली, इब्राहीम जौक, दाग देहलवी, मुहम्मद अली 'तिशना' सदरुद्दीन अजुर्दा, हकीम सुखानंद आदि शामिल थे। सदारत अंतिम मुगल सम्राट बहादुर शाह ज़फर स्वयं कर रहे थे। चलिए आपको सन् 1850 के आसपास ले चलें। तब लाल किले पर अंतिम मुगल सम्राट बहादुर शाह ज़फर का शासन था। विपरीत परिस्थितियों के बावजूद लालकिले में शायरों की महफिलें कभी-कभी जम जाती थीं। वर्ष 1990 के आसपास एक अखबार में सम्पादक के रूप में नियुक्ति के मध्य मैं कई बार लाल किले के सामने से गुज़रा तो वहां के आखिरी मुशायरे के बारे में कुछ जानकारी एकत्र करने की धुन सवार हुई। वहां चांदनी चौक के कुछ पुराने लोगों को तलाशा। एक स्वीट शॉप के बुजुर्ग मालिक से इस बारे में किसी पुराने बुजुर्ग के बारे में पूछा तो उस मुशायरे के बारे में कोई प्रामाणिक जानकारी दे सके। उसने बताया कि लाल किले के उस चर्चित आखिरी मुशायरे के बारे में मेरे दादा तो बताया करते थे। वह बताते थे कि जिस दिन आखिरी मुशायरा होना था, उस दिन लाल किले के आसपास फूलों के गजरों की दुकानें सज गई थी। देश के नामी शायरों का स्वागत इत्र व फूलपत्तियों की वर्षा से किया गया था। मुशायरे का सबसे बड़ा आकर्षण तो स्वयं बहादुर शाह ज़फर ही थे, मगर उस दिन अदब-आदाब के साथ आने वालों में शामिल थे, मिर्ज़ा गालिब, उस्ताद ज़ौक, दाग देहलवी, मुस्तफा खान शेफ्ता, आजुर्दा, मोमिन खान, आगा खान ऐश आदि। ज़फर के समय में यह मुमकिन था कि उस मुशायरे का कोई प्रामाणिक विवरण मिल जाता मगर हालात इतने तनावपूर्ण थे कि शायद किसी का ध्यान इस तरफ नहीं गया।बहरहाल, लाल किले के हर मुशायरे में शायरों को मालामाल होने की उम्मीदें होती थी। मगर उस दिन ज़फर की आंखें नम भी थी और कुछ-कुछ झुकी-झुकी सी भी थी। उस दिन उन्होंने कुछ 'शेअर' पढ़े और फिर एक पूरी गज़ल। गज़ल इस तरह से थी-

न किसी की आंख का नूर हूं न किसी के दिल का करार हूं

जो किसी के काम न आ सके मैं वो एक मुश्त-ए-गुबार हूं

मैं नहीं हूं नग़मा-ए-जां फज़ा मुझे सुन के कोई करेगा क्या

मैं बड़े वियोग की हूं सदा मैं बड़े दुखों की पुकार हूं

मेरा रंग रूप बिगड़ गया मेरा यार मुझसे बिछड़ गया

जो चमन खिज़ां से उजड़ गया मैं उसी की फस्ल-ए-बहार हूं

न मैं 'मुतर' उनका हबीब हूं न मैं 'मुतर' उनका रकीब हूं

जो बिगड़ गया वो नसीब हूं जो उजड़ गया वो दयार हूं

उसी मुशायरे को एक नाटक के रूप में कुछ वर्ष पहले दिल्ली में डॉ. एम. सईद आलम ने दिलचस्प ढंग से पेश किया था। उन दिन परिस्थितियां ऐसी नहीं थी कि उस ऐतिहासिक मुशायरे को कोई लिखित तफसील मिल सकती, लेकिन दिल्ली के अदबी क्षेत्रों में एक लम्बे अर्से तक उस मुशायरे की चर्चा होती रही और फिर पीढ़ी-दर-पीढ़ी उसका ज़िक्र भी दिल्ली के पुराने अदबी घरानों में जारी रहा। इस नाटक में 'ज़फर' की भूमिका टॉम आल्टर ने निभाई थी, जबकि मिर्ज़ा गालिब की भूमिका प्रभावी ढंग से हरीश छाबड़ा ने निभाई।

पीढ़ी-दर-पीढ़ी प्राप्त विवरणों के अनुसार इस मुशायरे में ऐसे भी शायर थे जो निजी रूप में व अदबी जिन्दगी में एक-दूसरे को कतई बर्दाश्त नहीं करते थे। मसलन उस्ताद ज़ौक व मिर्ज़ा गालिब, दोनों ही एक-दूसरे पर फब्तियां कसते रहते थे। ज़ौक शहंशाह के औपचारिक रूप से उस्ताद माने जाते थे, मगर गालिब को भी बहादुरशाह ज़फर के दरबार में उतनी ही इज्ज़त मिलती थी, जितनी कि उस्ताद ज़ौक को। एक घटना अदबी क्षेत्रों में बेहद चर्चित रही थी। एक बार उस्ताद ज़ौक, पालकी में बैठकर लाल किले में बादशाह के दरबार की ओर जा रहे थे। रास्ते में चांदनी चौक में एक पान वाले की दुकान पर बैठे मिर्ज़ा गालिब ने बुलंद आवाज़ में व्यंग्य कस दिया,

'बना है शाह का मुसाहिब फिरे है इतराता'

गालिब ने यह मिसरा इतनी बुलंद आवाज़ में पढ़ा कि ज़ौक को भी सुनाई दे गया। वह बेहद तिलमिलाए। उन्होंने लाल किले में पहुंचते ही बादशाह को शिकायत की कि मिर्ज़ा गालिब ने सरेआम उनका और साथ-साथ शहंशाह का अपमान किया था।

बादशाह को यह सब अच्छा नहीं लगा। उन्होंने फौरन मिर्ज़ा गालिब को बुलावा भेजा। गालिब से ज़फर ने स्वयं पूछा, 'मिर्ज़ा आप तो अदब की दुनिया के सरताज माने जाते है। आपसे तो ऐसी बेअदबी की उम्मीद नहीं थी।'

मिर्ज़ा गालिब व्यंग्यकार तो थे ही, अपने वक्त के विलक्षण 'हाज़िर जवाब' भी थे। उन्होंने सफ़ाई दी, 'आपने सही फरमाया बादशाह-आलम। मैं ऐसी गुस्ताखी कैसे कर सकता हूं मैंने तो अभी अपने एक ताज़ा शेअर का पहला मिसरा ही पढ़ा था।, मगर उस्ताद ज़ौक ने दूसरा मिसरा सुना ही नहीं और आपके पास चले आए शिकायत लेकर। मेरा पूरा 'शेअर' तो अपने बारे में ही था। पूरा 'शेअर' यूं था-

'बना है शाह का मुसाहिब/फिरे है इतराता/

वरना शहर में 'गालिब' की आबरू क्या है/'

बादशाह ज़फर, गालिब की चतुराई भांप गए थे, मगर उन्होंने एक अच्छे ढंग से विवाद समेटने के लिए गालिब के शेअर की तारीफ की। उस्ताद ज़ौक को इस सारे प्रकरण में स्वयं ही अपनी शिकायत के लिए माफी मांगनी पड़ी थी।

पुराने खानदानी आख्यानों के अनुसार उस आखरी मुशायरे पर बादशाह ज़फर की आंखें बार-बार नम हो आती थी। अपने दरबार में शायरों को अशर्फियों के उपहार देने वाले बादशाह का खजाना उस दिन लगभग खाली था। चांदनी चौक के कुछ पुराने खानदान अपने बुजुर्गों के हवाले से बताते है कि उस शहंशाह ने अपने शॉल व गले में पहने कुछ आभूषण, अपनी अंगूठियां व अपने डायनिंग-हाल की कुछ बेशकीमती चांदी की प्लेटें ही शायरों को नज़र की थी।

उस बार अशर्फी न दे पाने के लिए 'ज़फर' ने हर शायर से आंखें झुकाकर मुआफी भी मांगी थी और यह आशंका भी व्यक्त कर दी थी कि 'शायद यह नशिस्त (संगोष्ठी)' आखिरी नशिस्त ही होगी।

तब ज़फर क्या थे। हिन्दुस्तान के एक बेबस शहंशाह। शायर थे सो शायरों के शौकीन होने के बायस मुशायरा रखते थे। दाग ने मिर्ज़ा गालिब पर ये शेर दागा था-

अगर अपना कहा जो आप ही समझे तो क्या समझे

मज़ा तो तब है जब कि एक बोले और सब समझें।

चूंकि बादशाह ज़फर उस दिन मंच संचालन नहीं कर रहे थे, सो शम्मां अपनी जगह ही रोशन रही और बारी-बारी से शायरों के पास नहीं लाई गई। उम्मीद थी कि पहले की तरह गालिब छा जाएंगे लेकिन ऐसा हुआ नहीं।

उन्होंने हाजिर-जवाब मंच संचालक की भूमिका निभाई। मसलन जब बतौर शायरी अपनी एक शायर की बारी आती है तो गालिब उसके बारे में कहते-साहब ब्रितानिया सरकार में अफसर है। ग्यारह सौ रुपए सालाना की तनख्वाह पाते है इतने के ही बाजार में मेरे नाम कर्ज है। वहां नौकरी और यहां शाइरी। सो साहब जादूबयानी करते है।' कहते है कि मुशायरे में मंच लूटी मोमिन ने।

तुम मेरे पास होते हो गोया

जब कोई दूसरा नहीं होता।

हाले दिल उनको मैं लिखूं क्योंकर

हाथ दिल से जुदा नहीं होता।

टूटे हाथ से जब मोमिन ये शेर पढ़ते थे तो शेर और भी मौजूं हो उठता था। मोमिन की आवाज मधुर और धीमी थी। वहीं दाग सबसे बुलंद आवाज वाले थे। ज़ौक अपने रूतबे के बावजूद बुलंद रहते थे। ज़फर ने जो सुनाया वो तत्कालीन हिन्दुस्तान का हालाते हाज़रा था। उनके बुढ़ापे ने उनकी बादशाहत की बेबसी को और उभारा। अंत में ज़फर साहब की बात- शेर वो नहीं जिसे सुनकर वाह निकल जाए, शेर वो जिसे सुनकर आह निकल आए, और इस तरह से चला था लाल किले का वह आखिरी मुशायरा।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक विजय कुमार घाडी ने वन्दना ऑफसेट प्रिन्टर्स, ए-9, साउथ पैंचशीला एक्स. दिल्ली-33, से मुद्रित कर कार्यालय, बी-2/370, सुल्तानपुरी, दिल्ली-86 से प्रकाशित किया सम्पादक : विजय कुमार घाडी, मो : 09582093548 समाचार पत्र में प्रकाशित सामग्री से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं विवादास्पद केवल दिल्ली कोर्ट में होंगे। (DELHIN/2011/[illegible])

टीएमयू कैंपस में होली के रंगों में सराबोर नज़र आए स्टुडेंट्स

मुरादाबाद।

तीर्थंकर महावीर यूनिवर्सिटी के स्टुडेंट्स कैंपस में होली पर रंगों में सराबोर नज़र आए। विशेषकर नवागत और अंतिम बरस के छात्रों में होली पर्व का उत्साह अधिक देखने को मिला। अपने-अपने घरों की रवानगी से पूर्व न केवल डे स्कॉलर्स, बल्कि हॉस्टलर्स ने एक-दूसरे को गुलाल लगाकर जमकर ठुमके लगाए। साथ ही सेल्फी और ग्रुप फोटो क्लिक करने से नहीं चूके। जैसे होली के रंग चमकते हैं, वैसे ही आपका जीवन भी खुशियों से जगमगाता रहे.. गुलाल की महक आपके जीवन में खुशियाँ घोल दे.... सरीखे वाक्यों से एक दूसरे को हैप्पी होली विश की। मेडिकल, डेंटल, टिमिट, सीसीएसआईटी, सीओई आदि कॉलेजों के स्टुडेंट्स इस मस्ती में शामिल रहे। फैकल्टीज़ ने भी एक-दूसरे को गुलाल लगाकर कहा, बुरा न मानो होली है। फ्रेशर्स स्टुडेंट्स ने अपने सीनियर्स को रंग-

बिरंगे गुलाल लगाया तो फाइनल ईयर के स्टुडेंट्स ने फेयरवेल पार्टी की मानिंद होली को सेलिब्रेट किया। रंग-बिरंगे परिधानों में स्टुडेंट्स को पहचान पाना भी मुश्किल हो गया। ई-लॉबी में स्टुडेंट्स ने दोस्तों के रंग अपने पसंदीदा व्यंजनों का लुफ्त भी उठाया। हॉस्टल्स में होली के पर्व पर डीजे पर छात्र-छात्राएं खूब थिरके। डेंटल के स्टुडेंट्स ने रंग बरसे भीगे चुनर वाली..., बलम पिचकारी जो तुने मुझे मारी....सरीखे गानों पर ठुमके लगाए। बालीवुड, हालीवुड, पंजाबी, हरियाणवी, राजस्थानी सरीखे गानों की धुनों पर इस होली के रंग अविस्मरणीय हो गए। इस मौके पर एमबीबीएस से आरुषी, एमडीएस से डॉ. हर्षित सेठी, डॉ. मुकुल धान्या, बीडीएस से प्रवचन, एमबीए से आर्जव आदि मौजूद रहे।

राज्यपाल से मिला स्वदेशी जागरण मंच का प्रतिनिधि मंडल

मुरादाबाद।

स्वदेशी जागरण मंच के शीर्ष नेतृत्व ने आज उत्तर प्रदेश की महामहिम रा'यपाल आनन्दी बेन पटेल से लखनऊ लोकभवन में भेंट कर राज्य में उद्यमिता आयोग के गठन, विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में उद्यमिता केन्द्रों की स्थापना सहित अनेक विषयों पर चर्चा की। स्वदेशी जागरण मंच के अखिल भारतीय विचार विभाग प्रमुख डॉ राजीव कुमार के नेतृत्व में अखिल भारतीय सह समन्वयक डॉ राजकुमार मित्तल, पूर्वी उत्तर प्रदेश क्षेत्र संयोजक अनुपम श्रीवास्तव, पश्चिमी उत्तर प्रदेश क्षेत्र संयोजक डॉ अमितेश अमित , अवध प्रान्त संयोजक अमित सिंह सहित 5 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल ने महामहिम रा'यपाल जी से भेंट कर 7 सूत्रीय मांग पत्र सौंपा। डॉ0 राजीव कुमार ने कहा कि नई शिक्षा नीति में चूंकि उद्यमिता विषय को

सभी स्कूल,कॉलिजों में अनिवार्य करने का प्रस्ताव दिया गया है इसलिए सरकार उद्यमिता विषय को पाठ्यक्रम में सम्मिलित कर स्कूल कालेजों में उद्यमिता केन्द्रों की स्थापना करें।

21 अगस्त को सभी विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में विश्व उद्यमिता दिवस के आयोजन , स्वदेशी उत्पादों को बढ़ावा देने के लिए सरकारी विभागों में स्वदेशी उत्पादों की खरीद को अनिवार्य करने एवं लघु एवं कुटीर उत्पादकों के उत्पादों को प्रोत्साहन देने हेतु सभी जिलों में स्वदेशी मेलों का आयोजन करने की मांग की। महामहिम ने आश्वस्त किया कि रा'य सरकार से चर्चा कर उनकी इस पहल में पूरा सहयोग करेगी।

मृतक बीएलओ के घर पहुंचा प्रदेश कांग्रेस का प्रतिनिधि मंडल

फतेहपुर।बीते शनिवार को बिन्दकी तहसील के गांव अलियाबाद निवासी शिक्षा मित्र अखिलेश सविता जो कि एसआईआर के कार्य में बीएलओ के पद पर कार्य कर रहे थे। उनके आत्महत्या कर लेने की जानकारी होने के बाद मृतक के परिजनों से मिलने हेतु प्रदेश कांग्रेस का एक प्रतिनिधि मंडल मृतक के घर पहुंचा। प्रतिनिधि मंडल को मृतक के परिजनों ने आप बीती सुनाते हुए कहा कि मृतक अखिलेश सविता 4 बार अपनी पुत्री की शादी का कार्ड लेकर अवकाश हेतु एसडीएम बिन्दकी से मिला परन्तु उसे छुट्टी प्रदान नहीं की गई जिससे क्षुब्ध होकर उसने आत्महत्या कर ली। परिजनों ने मृतक के सोसाइट नोट को भी दिखाया जिसमें उसने अपनी मौत का जिम्मेदार चुनाव आयोग को ठहराया है इसी के साथ उन्होंने यह भी बताया कि प्रशासन द्वारा 7.50 लाख रुपए दिया गया है बाकी 12.50 लाख रुपए मूवावजा स्वीकृति के बाद मिलने को कहा है। पूर्ण जानकारी के बाद फतेहपुर जिला अध्यक्ष महेश द्विवेदी ने कहा कि पारिवारिक स्थिति देखते हुए मुआवजे की रकम ना काफी है इसलिए वह प्रशासन से मांग करेंगे कि मृतक के आश्रितों को पचास लाख रुपए मुआवजा दिया जाए एवं साथ ही मृतक की पत्नी को मृतक के स्थान पर नौकरी दी जाए। प्रदेश प्रतिनिधि मंडल में फतेहपुर शहर अध्यक्ष आरिफ गुड्डा, प्रयाग राज अध्यक्ष फुजैल हाशमी, गंगा पार अध्यक्ष अशफाक हुसैन, कौशांबी अध्यक्ष गौरव पांडे, कानपुर महानगर अध्यक्ष पवन गुप्ता, रायबरेली अध्यक्ष पंकज तिवारी, हरिकेश त्रिपाठी कोऑर्डिनेटर प्रताप गढ़, पूर्व प्रदेश प्रवक्ता किशोर वार्ष्णेय जिला उपाध्यक्ष कलीम उल्ला सिद्दीकी, पूर्व अध्यक्ष पप्पू पाल, प्रवक्ता ई देवी प्रकाश दुबे, ओम प्रकाश कोरी, बाबर खान, निजामुद्दीन, राम नरेश महराज, प्रशांत शुक्ला, सुधीश पाण्डेय, ऋषभ पाण्डेय, सलीम खान आदि सैकड़ों कांग्रेसी मौजूद रहे।

प्रशासन के मुआवजे की रकम को बताया ना काफी

ईरान के सर्वोच नेता की शहादत पर शोक सभा व कैंडल मार्च का आयोजन

आब्दी मंजिल पर डोनाल्ड ट्रंप और बेंजामिन नेतन्याहू का पुतला जलाकर जताया विरोध

लखनऊ।

सुल्तानपुर जिले के घोष थाना क्षेत्र के बहेरा सादात गांव में ईरान के सर्वोच्च नेता आयतुल्लाह सैय्यद अली खामेनेई की शहादत की खबर फैलते ही क्षेत्र में शोक का माहौल छा गया। स्थानीय लोगों के अनुसार शिया समुदाय के कई घरों में चूल्हे तक नहीं जले और लोगों ने अपने रहबर की शहादत पर गहरा दुख व्यक्त किया। इस दौरान बहेरा सादात में बड़ी संख्या में लोगों ने कैंडल मार्च निकालकर शोक व्यक्त किया। इस मार्च में बूढ़नपुर और अल्हीपुर सहित आसपास के गांवों के स्थानीय लोग, युवा और सामाजिक कार्यकर्ता शामिल हुए। कैंडल मार्च गांव की मुख्य सड़कों से होता हुआ वरिष्ठ पत्रकार एवं साइबर जर्नलिस्ट एसोसिएशन के प्रदेश अध्यक्ष शहंशाह आब्दी के आवास 'आब्दी मंजिल' पहुंचा। आब्दी मंजिल पर प्रदर्शनकारियों ने अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और इजराइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू का पुतला जलाकर विरोध जताया। इस दौरान अमेरिका और इजराइल के खिलाफ जमकर नारेबाजी भी की गई। प्रतिभागियों ने हाथों में

मोमबत्तियां लेकर शांति, एकजुटता और इंसाफ का संदेश दिया। शोक सभा को संबोधित करते हुए मौलाना सैयद खादिम अब्बास जैदी ने कहा कि हमारे रहबर की शहादत हम सभी के लिए गर्व की बात है। उन्होंने अत्याचार के खिलाफ डटकर मुकाबला किया और कभी भी अन्याय के आगे सिर नहीं झुकाया। उनकी शहादत रमजान जैसे पाक महीने में हुई है।

हमारे रहबर ने यजीदियों से डट कर मुकाबला किया वो डरे नहीं, छिपे नहीं, सर नहीं झुकाया और शान से हंसते - हंसते शहादत पा ली, उनकी शहादत को दुनिया हमेशा याद रखेगी। वहीं साइबर जर्नलिस्ट एसोसिएशन के प्रदेश अध्यक्ष एवं वरिष्ठ पत्रकार शहंशाह आब्दी ने कहा कि ईरान के सुप्रीम लीडर ने हमेशा अत्याचार और अन्याय के खिलाफ आवाज उठाई। उन्होंने कहा कि उनकी शहादत दुनिया को यह संदेश देती है कि जुल्म के सामने कभी झुकना नहीं चाहिए। उन्होंने कहा कि सादगीपूर्ण जीवन जीते हुए उन्होंने इस्लाम के सिद्धांतों के अनुसार जीवन व्यतीत किया और अपने देश व इंसानियत के लिए संघर्ष करते हुए शहादत प्राप्त की। उनकी शहादत को आने वाली पीढ़ियां याद रखेंगी। ईरान के सुप्रीम लीडर हम सब के रहबर ने करबला की तर्ज़ पर जंग की उन्होंने कभी भी जंग में अपनी तरफ से पहल नहीं की बल्कि जंग का जवाब दिया है। इनकी शहादत ने दुनिया को फिर से पैगाम दिया है कि जुल्म के आगे कभी मत झुकना, जुल्म करने वाले से ज्यादा ज़ालिम वो होता है जो जुल्म का मुकाबला नहीं करता और जुल्म सहने वाला भी ज़ालिम होता है।

86 साल के एक मर्दे मुजाहिद ने इस्लाम की जंग अकेले लड़ी जबकि पूरी दुनिया और इस्लामी मुल्क खामोशी और बेपरवाही की नींद में डूबे हुवे थे, इस उम्र में भी वो अटल रहे ना थके न झुके बल्कि सच की आवाज़ बुलंद की ये इतिहास का एक ऐसा अध्याय है जिसे आने वाली पीढ़ियां हैरत और गर्व के साथ पढ़ेंगी। गौर तलब है कि इस शहादत में ईरान के सुप्रीम लीडर की 14 महीने की नवासी के साथ बेटी, एक बेटा, बहु और दामाद भी शामिल हैं। वैसे इस बर्बरता और जुल्म के खिलाफ कई जगह प्रदर्शन जारी और लोग इस जुल्म और ज्यादती की कड़े शब्दों में निंदा करता नजर आ रहा है और कई लोग इसे तीसरे विश्व युद्ध के आगाज़ की संज्ञा देते नजर आ रहे हैं।

होली की खुशियों में डूबे रहे भाजपाई

मुरादाबाद।

भारतीय जनता पार्टी महानगर के तत्वाधान में महानगर अध्यक्ष गिरीश भंडूला के नेतृत्व में प्रेम का प्रतीक रंगों का उत्सव होली त्यौहार रंगों के साथ मिलकर महानगर कार्यालय बुद्धि विहार पर बड़े ही धूमधाम से ढोल की थाप पर नाच गा कर मनाया गया। होली सेलिब्रेट कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप से पूर्व प्रदेश अध्यक्ष चौधरी भूपेंद्र सिंह जी शामिल रहे।

रंगों के पर्व होली पर महानगर कार्यालय बुद्धि विहार पर महानगर एवं जिले के सभी कार्यकर्ता होली का पर्व मनाने के लिए एकत्रित हुए पूर्व प्रदेश चौधरी भूपेंद्र सिंह के कार्यक्रम में आने की सूचना मिली सभी कार्यकर्ता उनके आगमन का बेसब्री से इंतजार कर रहे थे। चौधरी भूपेंद्र सिंह क्षेत्रीय महामंत्री हरिओम शर्मा, नगर विधायक रितेश गुप्ता के कार्यालय आगमन पर महानगर अध्यक्ष गिरीश भंडूला जिला अध्यक्ष

आकाश कुमार पाल एवं सभी कार्यकर्ताओं ने रंग गुलाल लगाकर कर उन्हें होली पर्व की शुभकामनाएं एव बधाई दी। उन्होंने भी सभी कार्यकर्ताओं का उत्साहवर्धन किया सभी ने एक दूसरे को गुलाल लगाकर गले मिलकर एवं गुजिया खिलाकर होली की शुभकामनाएं एवं बधाई दी। मुख्य अतिथि पूर्व प्रदेश अध्यक्ष चौधरी भूपेंद्र सिंह जी ने होली मिलन के उपरान्त सभी कार्यकर्ताओं से वार्ता की और कहा कि भाजपा विश्व की सबसे बड़ी पार्टी है हम सभी संगठन के कार्यकर्ता हैं हम सभी के लिए संगठन का आदेश सर्वमान्य होता है हम सभी को मिलकर कार्य करते रहना है आगे 2027 में विधानसभा चुनाव आने वाले है हम सभी को चुनाव को देखते हुए संगठन का कार्य करना है। होली मिलन कार्यक्रम में मुख्य अतिथि पूर्व प्रदेश अध्यक्ष चौधरी भूपेंद्र सिंह, क्षेत्रीय महामंत्री हरिओम शर्मा, नगर विधायक रितेश गुप्ता,जिला अध्यक्ष आकाश पाल,महानगर गिरीश भंडूला,राजन विश्नोई, कमल प्रजापति,नवीन चौधरी, चकित चौधरी,मीडिया प्रभारी महानगर राजीव गुप्ता,दिनेश शीर्षवाल,दिनेश सिसोदिया, नवदीप टंडन,विशाल त्यागी, हेमराज सैनी,चंद्र प्रजापति, शम्मी भटनागर,अजय वर्मा, सर्वेश पटेल,सुनीता शर्मा,शशी किरण,धर्मेश सैनी अभिषेक चौबे,हेमा खत्री,पूर्णिमा खन्ना, शीतल राजपूत,बबली यादव, कपिन गुप्ता,विपिन प्रजापति, सोमपाल प्रजापति,विशाल रस्तौगी,मिथुन शर्मा,राजीव शर्मा, अमित सिंह,विशाल सिंह गोलू,कपिल देव,सिद्धार्थ शर्मा, सौरभ सक्सैना,अश्वनी शर्मा, हरिओम सैनी,सुमित कुमार, राजीव गोस्वामी,प्रशांत कुमार, विकी कुमार,महावीर सिंह, आदि सैकड़ों की संख्या में महानगर, मंडल,मोर्चा,प्रकोष्ठ के पदाधिकारीगण एवं पार्षदगण शामिल रहे।

ऑल इंडिया पोस्ट कल्चरल मीट में शामिल हुए अरुण मोहन शंखधार

मुरादाबाद। अखिल भारतीय डाक सांस्कृतिक सम्मेलन मैसूर कर्नाटक में जिसमें सभी रा'यों के लगभग 400 कलाकारों द्वारा अखिल भारतीय स्तर पर प्रतिभाग किया गया था उसमें डाक भवन नई दिल्ली पोस्टल डायरेक्टेट की तरफ से ऑब्जर्वर/टेक्निकल डेलीगेट अरुण मोहन शंखधार डिप्टी पोस्टमास्टर प्रधान डाकघर मुरादाबाद एचओ को उनकी अति विशिष्ट अतिरिक्त योग्यताओं के कारण नियुक्त कर केंद्र सरकार डाक विभाग, दिल्ली की तरफ से विशेष रूप से भेजा गया था। जहां डाक विभाग दिल्ली एवं कर्नाटक राज्य के सर्वोच डाक विभाग के अधिकारियों के साथ-साथ मुख्य पोस्टल प्रशिक्षण केंद्र मैसूर के डायरेक्टर एवं अन्य गणमान्य अति विशिष्ट लोगों की गरिमामय उपस्थिति में ऑल इंडिया पोस्ट कल्चरल मीट मैसूर कर्नाटक में मुरादाबाद के श्री अरुण मोहन सौंख्यधर, डिप्टी पोस्टमास्टर, प्रधान डाकघर मुरादाबाद एचओ द्वारा मुरादाबाद जनपद का नाम रोशन कर विशिष्ट सम्मान भी प्राप्त किया।

द्वारका में कैंटीन ऑपरेटर की हत्या का खुलासा, दोस्त ने पार्टी में बुलाकर उतारा मौत के घाट

नई दिल्ली। दिल्ली की द्वारका पुलिस ने छत्तीसगढ़ भवन के 48 साल के कैंटीन ऑपरेटर अनुल्य गुप्ता के हत्याकांड की गुत्थी को सुलझा लिया है. लालच और लूट में इस हत्याकांड को अंजाम दिया गया था. मामले में द्वारका पुलिस ने मुख्य आरोपी समेत 4 आरोपियों को गिरफ्तार किया है. दिल्ली पुलिस के अनुसार, 23 फरवरी को द्वारका नॉर्थ पुलिस थाने में कैंटीन ऑपरेटर अनुल्य गुप्ता के लापता होने की सूचना दर्ज कराई गई थी, जिसमें शिकायतकर्ता ने बताया था कि उसका भाई अनुल्य गुप्ता 18 फरवरी से लापता है और उसकी कार का भी पता नहीं चल रहा है. परिवार ने भी किसी पिछली दुश्मनी या झगड़े से इनकार किया और कहा कि अनुल्य गुप्ता शांति से अपनी जिंदगी जी रहा था. द्वारका जिले के डीसीपी अंकित सिंह ने अनुल्य गुप्ता की तलाश के लिए टीम का गठन किया. शुरुआत में एएचटीयू अधिकारियों ने कार का विवरण प्राप्त किया गया था और पता चला कि कार को आखिरी बार 19-20 फरवरी की रात को यमुना एक्सप्रेसवे पर देखा गया था. द्वारका में भी मामले की जांच की गई और पता चला कि 18 फरवरी को अनुल्य गुप्ता ने एक बाइक बुक की थी और उसने अपनी कार छत्तीसगढ़ सदन में ही छोड़ दी थी. सीडीआर एनालिसिस की मदद से रैपिडो ड्राइवर का पता लगाया गया और रैपिडो ड्राइवर के कहने पर मटियाला एक्सटेंशन में एक घर की पहचान की गई, जहां रैपिडो ड्राइवर ने लापता व्यक्ति को छोड़ा था. ड्रॉप पॉइंट के आसपास के सीसीटीवी फुटेज की जांच की गई और लापता व्यक्ति को बिल्डिंग में घुसते हुए देखा गया, लेकिन वह कभी बाहर नहीं आया. अनुल्य के घुसने के बाद 4 और लोगों को भी बिल्डिंग में घुसते देखा गया. इसके बाद, कथित लोगों की संदिग्ध हरकतें देखी गईं. उन्होंने एक स्कूटी का इस्तेमाल भी किया. 19 फरवरी को अनुल्य गुप्ता की कार कुछ समय बाद बिल्डिंग के बेसमेंट में घुसती हुई देखी गई और कार को फिर से बिल्डिंग से बाहर आते हुए देखा गया, उसके बाद कार कुंडली की ओर चली गई. आरोपी लोगों की स्कूटी का पता चल गया और पता चला कि वह हरियाणा के हांसी क्षेत्र के रहने वाले हैप्पी के नाम रजिस्टर्ड है. टेक्निकल सर्विलांस की मदद से आरोपी का पता लगाया गया और लगातार पूछताछ में उसने बताया कि उसने अपने दोस्तों भूपेंद्र, कलाम, नीरज और सखी के साथ मिलकर अनुल्य गुप्ता को किडनैप करने और उससे पैसे ऐंठने की साजिश रची थी. जब पीड़ित ने पैसे देने से मना कर दिया, तो उन्होंने उसे मार डाला. हैप्पी उर्फ सूरज ने यह भी बताया कि करीब एक साल पहले वह छत्तीसगढ़ सदन कैंटीन में अनुल्य गुप्ता के संपर्क में आया था और उसने देखा कि अनुल्य सोने की कई अंगूठियां और ब्रेसलेट पहनता है. आरोपी ने अनुल्य गुप्ता को मटियाला एक्सटेंशन में अपने किराए के घर (जहां वह अपनी लिव-इन-पार्टनर सखी के साथ रह रहा था) पर एक पार्टी के लिए बुलाया और वे दोस्त बन गए. हैप्पी को यह भी पता था कि अनुल्य अपने परिवार से अलग रह रहा है. उसने अनुल्य से पैसे ऐंठने की साजिश रची और प्लान को पूरा करने के लिए भूपेंद्र, कलाम और नीरज (सभी हरियाणा से) से कॉन्टैक्ट किया. दिल्ली पुलिस के अनुसार, आरोपी ने कबूल किया कि उसने 18 फरवरी को अनुल्य गुप्ता को मटियाला एक्सटेंशन में अपने किराए के घर पर पार्टी के लिए बुलाया और उसके बाद भूपेंद्र, कलाम और नीरज घर में घुस आए.

पश्चिम एशिया संकट- अमेरिकी राष्ट्रपति का बड़ा बयान, कहा- 4-5 हफ्ते तक चलेगा अभियान

ट्रंप बोले- ईरान का परमाणु कार्यक्रम रोकना जरूरी था, उसने हमेशा धोखा दिया है

***प. एशिया में तनाव के बीच ट्रंप-स्टार्मर आमने-सामने, कहा- ब्रिटिश पीएम ने एयरबेस के इस्तेमाल से रोका**

***भारत ने टकराव पर कनाडा से चर्चा की; नेतन्याहू के दफ्तर पर हमले की खबर, इस्राइल का इनकार**

तेहरान। इजरायल-अमेरिका और ईरान जंग का आज तीसरा दिन है। अमेरिका ने बताया कि कुवैत ने उसके 3 F-15E स्ट्राइक ईगल फाइटर जेट्स को गिरा दिया है। अमेरिकी सेना के मुताबिक, कुवैत के एयरडिफेंस सिस्टम ने गलती से इन विमानों को दुश्मन समझकर निशाना बनाया। हादसे में सभी अमेरिकी पायलट सुरक्षित हैं। दूसरी तरफ ईरान ने साइप्रस में ब्रिटिश रॉयल एयर फोर्स के अक्रोटिरी बेस पर ड्रोन हमला किया है। ब्रिटेन के रक्षा मंत्रालय के अनुसार, रविवार देर रात हुए इस हमले में बेस को मामूली नुकसान पहुंचा, लेकिन कोई हताहत नहीं हुआ। इसके जवाब में ब्रिटिश सेना कार्रवाई कर रही है। दरअसल, ब्रिटिश पीएम कीर स्टारमर ने ईरानी मिसाइल साइट्स पर हमले के लिए अमेरिका को इस बेस का इस्तेमाल करने की अनुमति दी थी।

ईरान में 555 की मौत, 740 घायल

अल-जजीरा की रिपोर्ट के मुताबिक, अमेरिका और इजराइल ने मिलकर अब तक ईरान के 1000 से ज्यादा ठिकानों पर हमले किए हैं। इस दौरान शुरुआती 30 घंटे में 2000 से ज्यादा बम गिराए गए। इनमें अब तक 555 लोगों की मौत हो चुकी है, जबकि 700 से ज्यादा लोग घायल हुए हैं।

एक स्कूल पर मिसाइल गिरने से 180 छात्राओं की मौत हो गई और 45 घायल हैं। 28 फरवरी को शुरू हुई इस लड़ाई के पहले दिन हुई बमबारी में ईरानी सुप्रीम लीडर अयातुल्ला अली खामेनेई मारे गए थे। इसके अलावा रविवार को 3 अमेरिकी सैनिक मारे गए थे। ओमान की खाड़ी में सोमवार को एक तेल टैंकर पर बम से लैस ड्रोन बोट से हमला किया गया, जिसमें एक भारतीय नाविक की मौत हो गई। ओमान की सरकारी समाचार एजेंसी के अनुसार, मार्शल आइलैंड्स-फ्लैग्ड टैंकर MKD VYOM को मस्कट तट के पास निशाना बनाया गया।

नेतन्याहू के दफ्तर पर ईरान के हमले का दावा, इजरायल ने किया खारिज

ईरान लगातार अपनी मिसाइलों से हमले पर हमले कर रहा है. इसी बीच ईरानी सेना ने दावा किया है कि उसने इजरायली पीएम नेतन्याहू के दफ्तर को निशाना बनाया है, जिसे इजरायल पूरी तरह से खारिज कर रहा है.

उसका कहना है कि ऐसा कोई हमला नहीं हुआ है, जबकि ईरान नेतन्याहू की जान जाने तक का दावा कर रहा है.

परिवर्तन का अर्थ सिर्फ मुख्यमंत्री बदलना नहीं, बल्कि भ्रष्ट टीएमसी को उखाड़ फेंकना है- शाह

अमित शाह का दावा- बंगाल में तुष्टिकरण से विकास नहीं हो सकता, आठ लाख करोड़ के कर्ज में डूबा है राज्य

पश्चिम बंगाल। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने आज बंगाल में चुनावी बिगुल फूंका। उन्होंने पश्चिम बंगाल के दक्षिण 24 परगना में एक जनसभा के दौरान तृणमूल कांग्रेस की नीतियों और मुख्यमंत्री ममता बनर्जी पर जमकर हमला बोला। उन्होंने कहा कि तुष्टिकरण से राज्य का विकास नहीं हो सकता। शाह ने दावा किया कि राज्य आठ लाख करोड़ के कर्ज में डूबा है। शाह ने मदरसों को मिलने वाली आर्थिक मदद पर भी सवाल खड़े किए। उन्होंने दूसरे राज्यों के विपक्षी दलों की सियासत पर भी हमले बोले। उन्होंने बिहार, असम, तमिलनाडु जैसे राज्यों में परिवारवाद का आरोप लगाते हुए तेजस्वी यादव, गौरव गोगोई और एमके स्टालिन की राजनीति पर भी तीखी टिप्पणी की। आगे केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कहा कि भाजपा की परिवर्तन यात्रा का उद्देश्य राज्य में बदलाव लाना और बंगाल को घुसपैठियों से मुक्त करना है। उन्होंने कहा कि भाजपा पश्चिम बंगाल में भ्रष्ट तृणमूल कांग्रेस सरकार को हटाकर विकास का नया दौर शुरू करना चाहती है। शाह ने आरोप लगाया कि तुष्टिकरण की राजनीति के कारण राज्य का विकास प्रभावित हुआ है और बंगाल की स्थिति लगातार खराब हुई है। अमित शाह ने मुख्यमंत्री ममता बनर्जी पर निशाना साधते हुए कहा कि अगर गलती से फिर तृणमूल कांग्रेस सत्ता में लौटती है तो सरकार ममता बनर्जी नहीं बल्कि उनके 'भतीजे' द्वारा चलाई जाएगी। उन्होंने आरोप लगाया कि ममता बनर्जी राज्य के विकास में रुचि नहीं रखतीं और सिर्फ अभिषेक बनर्जी को मुख्यमंत्री बनाना चाहती हैं। शाह ने यह भी कहा कि पूर्व डीजीपी राजीव कुमार को राज्यसभा भेजा जा रहा है, जिनके कार्यकाल में बंगाल में भ्रष्टाचार बढ़ा। गृह मंत्री ने दावा किया कि तृणमूल कांग्रेस ने बंगाल को घुसपैठियों के लिए सुरक्षित जगह बना दिया है। उन्होंने कहा कि भाजपा की सरकार बनने पर घुसपैठियों को राज्य से बाहर किया जाएगा और सीमा वाले राज्य की सुरक्षा मजबूत की जाएगी। शाह ने भरोसा दिलाया कि किसी भी हिंदू शरणार्थी की नागरिकता नहीं छीनी जाएगी। साथ ही उन्होंने वादा किया कि भाजपा सत्ता में आने पर राज्य सरकारी कर्मचारियों को सातवें वेतन आयोग के अनुसार वेतन सुनिश्चित करेगी।

खामेनेई की मौत पर पीएम मोदी चुप क्यों? इजराइल-ट्रंप से डर है? संजय राउत का तीखा सवाल

मुंबई। शिवसेना (यूबीटी) सांसद संजय राउत ने सोमवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से ईरान-इजराइल संघर्ष में हस्तक्षेप करने और युद्ध रोकने का आग्रह किया। उन्होंने भारत के सच्चे मित्र ईरान के सर्वोच्च नेता अयातुल्ला खामेनेई की हत्या पर सरकार की चुप्पी की आलोचना की। पत्रकारों से बात करते हुए राउत ने कहा कि मोदी जी विश्व नेता और विश्वगुरु हैं, उन्हें ईरान-इजराइल संघर्ष रोकना चाहिए। मोदी जी को अपने दोस्तों से भी ऐसा करने को कहना चाहिए। संजय राउत ने कहा कि ईरान के सर्वोच्च नेता अयातुल्ला अली खामेनेई को इजराइल को छोड़कर पूरी दुनिया मान्यता देती थी।

वे भारत के सच्चे मित्र थे जिन्होंने हमेशा हमारे देश का समर्थन किया। वे नेहरू जी के अनुयायी भी थे। क्या मोदी जी इसी बात से नाराज हैं? जब ऐसे नेता की हत्या होती है, तो भारत के प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति को शोक व्यक्त करना चाहिए। वे किससे डरते हैं - इजराइल से या राष्ट्रपति ट्रंप से?

ईरान का कुर्दिस्तान में अमेरिकी सैन्य बेस पर बड़ा अटैक, धमाकों से गूंज उठा एरबिल एयरपोर्ट

इराकी कुर्दिस्तान की राजधानी एरबिल के पास स्थित एरबिल इंटरनेशनल एयरपोर्ट परिसर, जहां अमेरिकी सैन्य मौजूदगी है, अचानक धमाकों से गूंज उठा। स्थानीय सूत्रों के मुताबिक कई ड्रोन और रॉकेटों की गतिविधियां दर्ज की गईं। एयर-डिफेंस सिस्टम सक्रिय हुआ। कुछ प्रोजेक्टाइल हवा में ही नष्ट किए गए। एयरपोर्ट के आसपास विस्फोटों की आवाजें सुनी गईं। अब तक एरबिल हमले में अमेरिकी हताहतों की कोई स्पष्ट आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है, लेकिन सुरक्षा घेरा कड़ा कर दिया गया है। अमेरिका और ईरान के बीच हालिया सैन्य टकराव के बाद पूरे क्षेत्र में बदले की कार्रवाई तेज हो गई है। अमेरिकी रक्षा विभाग पहले ही पुष्टि कर चुका है कि संघर्ष की अन्य घटनाओं में 3 अमेरिकी सैनिक मारे गए व 5 गंभीर रूप से घायल हुए। वाशिंगटन ने संकेत दिए हैं कि सैन्य अभियान कई हफ्तों तक जारी रह सकता है। इससे यह आशंका गहराई है कि संघर्ष सीमित नहीं रहेगा। अमेरिका ने दावा किया है कि उसने ईरान की शक्तिशाली सैन्य इकाई IRGC के ढांचे को बड़ा नुकसान पहुंचाया है। इसके बाद ईरान-समर्थित शिया मिलिशिया समूहों ने इराक और आसपास के इलाकों में अमेरिकी ठिकानों को निशाना बनाने की धमकी दी। अमेरिकी नेतृत्व ने स्पष्ट किया है कि सैनिकों पर हमलों का उचित और निर्णायक जवाब दिया जाएगा। इराकी कुर्दिस्तान प्रशासन ने नागरिकों से शांति बनाए रखने और अफवाहों से बचने की अपील की है। एरबिल एयरपोर्ट और आसपास के इलाकों में सुरक्षा घेरा बढ़ाया गया व उड़ानों पर अस्थायी असर की खबरें सामने आई हैं। एरबिल हमले का अंतिम नुकसान और हताहतों का आधिकारिक ब्योरा अभी बाकी है। यदि हमले जारी रहे तो इराक और खाड़ी क्षेत्र में अमेरिकी ठिकानों की सुरक्षा और कड़ी होगी। कूटनीतिक प्रयास जारी हैं, लेकिन फिलहाल हालात शांत होने के संकेत कमजोर दिख रहे हैं।

खाड़ी क्षेत्र में फंसे भारतीयों को वापस लाने के लिए केंद्र सरकार तैयार : प्रह्लाद जोशी

नई दिल्ली।

केंद्रीय मंत्री प्रह्लाद जोशी ने सोमवार को कहा कि केंद्र सरकार खाड़ी क्षेत्र में फंसे भारतीयों को वापस लाने के लिए पूरी तरह तैयार है और उनकी सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए विदेश स्थित भारतीय मिशनों के संपर्क में है। एक बयान में जोशी ने कहा कि संघर्ष के कारण प्रभावित लोगों की सुरक्षित वापसी सुनिश्चित करने के लिए संबंधित भारतीय दूतावासों के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ चर्चा की गई है। उन्होंने कहा, जब भी कन्नड़ भाषी और अन्य भारतीय दुनिया में कहीं भी संकट का सामना करते हैं, केंद्र सरकार उनकी सुरक्षित वापसी सुनिश्चित करती है। इससे पहले, हम यूक्रेन में फंसे लोगों को वापस लाए थे। भारतीय जहां भी हों, उनकी सुरक्षा हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है। जोशी ने कहा कि ईरान-इजराइल संघर्ष की गंभीरता के कारण कन्नड़ भाषी लोगों के परेशानी में फंसे होने की सूचना मिली है और उनकी सुरक्षा के लिए आवश्यक कदम उठाने हेतु वरिष्ठ मंत्रियों के साथ तत्काल परामर्श किया गया है। चिंतित परिवारों को आश्वस्त करते हुए मंत्री ने कहा कि घबराने की कोई जरूरत नहीं है और सरकार सभी भारतीयों को सुरक्षित वापस लाने के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने कहा कि युद्ध प्रभावित क्षेत्रों में हवाई यात्रा करना फिलहाल जोखिम भरा है और भविष्य में किसी भी तरह के कदम उठाने से पहले जानकारों से परामर्श लिया जा रहा है। जोशी ने कहा कि दुबई में फंसे लोगों की सहायता के लिए भी प्रयास जारी हैं, जहां उड़ान संचालन प्रभावित हुआ है। उन्होंने कहा, किसी को भी चिंता करने की जरूरत नहीं है। उन्हें सुरक्षित वापस लाने के लिए गंभीर प्रयास किए जा रहे हैं।

पश्चिमी एशिया के हालत चिंताजनक, बातचीत से निकले समाधान - मोदी

नई दिल्ली। पश्चिमी एशिया में जारी तनाव के बीच प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने हालात को चिंताजनक बताते हुए शांति और संवाद का रास्ता अपनाने की अपील की है। प्रधानमंत्री ने स्पष्ट कहा कि मौजूदा संकट का समाधान केवल बातचीत और कूटनीतिक प्रयासों से ही संभव है। पीएम मोदी ने कहा कि भारत हमेशा से शांति, स्थिरता और संवाद का समर्थक रहा है। उन्होंने दोहराया कि किसी भी तरह के सैन्य टकराव से क्षेत्रीय अस्थिरता बढ़ती है, जिसका असर वैश्विक स्तर पर भी पड़ सकता है। ऐसे में सभी पक्षों को संयम बरतते हुए बातचीत की मेज पर लौटना चाहिए।

भारतीयों की सुरक्षा सर्वोच्च प्राथमिकता

पीएम मोदी ने यह भी कहा कि विदेशों में रह रहे भारतीय नागरिकों की सुरक्षा भारत सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है। सरकार स्थिति पर लगातार नजर बनाए हुए है और जरूरत पड़ने पर हर संभव कदम उठाएगी। उन्होंने भरोसा दिलाया कि भारत सभी संबंधित देशों के साथ संपर्क में है और शांति बहाली के लिए रचनात्मक भूमिका निभाने को तैयार है।

यूरेनियम और परमाणु सहयोग पर भी बोले पीएम मोदी

कनाडाई प्रधानमंत्री कार्नी के साथ द्विपक्षीय वार्ता के बाद पीएम मोदी ने बताया कि भारत और कनाडा ने यूरेनियम पर एक ऐतिहासिक समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं। इसके अलावा, नागरिक परमाणु सहयोग को आगे बढ़ाते हुए दोनों देश छोटे मॉड्यूलर रिएक्टरों पर एक साथ मिलकर काम करेंगे।

इसको भी याद कर लेते, क्या यह इस्लाम के खिलाफ नहीं, मिडिल ईस्ट पर हमलों को बोले निशिकांत दुबे?

नई दिल्ली। अमेरिका और इजरायल के संयुक्त हमले में ईरान के सर्वोच्च नेता अयातुल्ला अली खामेनेई की मौत के बाद ईरान की ओर से पलटवार जारी है। खामेनेई की मौत ने मिडिल ईस्ट की आग को और भड़का दिया है। एक ओर इजरायल और अमेरिका की ओर से ईरान पर हमला जारी है वहीं ईरान इजरायल के साथ ही ओमान, बहरीन, दुबई, सऊदी और कतर इन देशों को भी टारगेट कर रहा है। ईरान ने इजरायल के अलावा खाड़ी के उन देशों को भी टारगेट किया है जहां अमेरिका के सैन्य ठिकाने हैं। खामेनेई की मौत के बाद भारत में भी कई जगहों पर अमेरिका और इजरायल के खिलाफ नारेबाजी और प्रदर्शन देखने को मिला है। वहीं बीजेपी सांसद निशिकांत दुबे ने कहा कि दुबई, ओमान जैसे देशों पर हमला क्या इस्लाम के खिलाफ नहीं है। बीजेपी सांसद निशिकांत दुबे ने X पर लिखा कि यदि कुरान मुस्लिम भाईचारे की बात करता है तो दुबई, ओमान, बहरीन, सऊदी, कतर सभी तो इस्लाम के ही राष्ट्र हैं, उनके ऊपर हमला क्या इस्लाम के खिलाफ नहीं है। बीजेपी सांसद ने सवाल पूछते हुए कहा कि इन देशों पर हमला क्या इस्लाम के खिलाफ नहीं है। इसके साथ ही निशिकांत दुबे ने कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे के बयान पर टिप्पणी करते हुए विदेश मंत्रालय के एक पुराने बयान का जिक्र करते हुए लिखा कि इसको भी याद कर लेते। विदेश मंत्रालय के जिस बयान को बीजेपी सांसद ने शेयर किया वह 16 सितंबर 2024 का है। विदेश मंत्रालय की ओर से बयान में कहा गया था कि हम ईरान के सुप्रीम लीडर के भारत में अल्पसंख्यकों के बारे में की गई टिप्पणी की निंदा करते हैं। यह गलत जानकारी पर आधारित है। इसी महीने में ईरानी नेता ने तेहरान में एक सभा को संबोधित करते हुए भारत के मुसलमानों के बारे में बात की थी। वहीं कांग्रेस ने ईरान के सर्वोच्च नेता अयातुल्ला अली खामेनेई की हत्या की निंदा करते हुए कहा कि किसी भी बाहरी शक्ति को सत्ता परिवर्तन कराने का अधिकार नहीं है। पार्टी अध्यक्ष खरगे ने एक बयान में कहा कि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस युद्ध की औपचारिक रूप से घोषणा किए बिना एक सैन्य हमले में ईरान के सर्वोच्च नेता अली हुसैनी खामेनेई की लक्षित हत्या किए जाने की स्पष्ट रूप से निंदा करती है।

मानव विकास पर ऐतिहासिक फोकस - शिक्षा क्षेत्र को मिली है अभूतपूर्व बजट बढ़ोतरी- मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी

मौलिक, माध्यमिक और उच्चतर शिक्षा के बजट में की गई है उल्लेखनीय वृद्धि हर सरकारी स्कूल में ड्यूल डेस्क, आईसीटी लैब नवीनीकरण और खेल मैदानों का होगा विकास

चंडीगढ़।

हरियाणा के मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी ने हरियाणा विधानसभा में वर्ष 2026-27 का बजट प्रस्तुत करते हुए शिक्षा और मानव विकास को सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता बताया। मुख्यमंत्री ने कहा कि मानव विकास किसी भी सशक्त और समावेशी समाज की आधारशिला है। हर बच्चे को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं, कौशल विकास और खेल के अवसर उपलब्ध कराना हमारी सरकार का संकल्प है। मुख्यमंत्री ने कहा कि वर्ष 2025-26 के संशोधित अनुमानों की तुलना में मौलिक शिक्षा विभाग का बजट 9.79 प्रतिशत से बढ़ाकर 10,855.48 करोड़ रुपये, सेकेंडरी शिक्षा विभाग का बजट 11.98 प्रतिशत से बढ़ाकर 7,862.41 करोड़ रुपये तथा उच्चतर शिक्षा विभाग का बजट 6.06 प्रतिशत से बढ़ाकर 4,197.38 करोड़ रुपये करने का प्रस्ताव है। उन्होंने कहा कि बजट पूर्व परामर्श बैठकों में प्राप्त 122 सुझावों में से 88 सुझावों को इस बजट में सम्मिलित किया गया है।

विद्यालय शिक्षा को नई ऊंचाइयों तक ले जाने की है पहल

मुख्यमंत्री ने कहा कि हर 10 किलोमीटर के दायरे में मॉडल संस्कृति विद्यालय खोलने की दिशा में अब तक 25 राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय शुरू किए जा चुके हैं। वर्ष 2026-27 में 250 विद्यालयों को सीएम (एक्सीलेंस एंड एली इंग्लिश) विद्यालयों के रूप में विकसित किया जाएगा, जहां हिंदी और अंग्रेजी दोनों माध्यमों में शिक्षा उपलब्ध होगी। एसटीईएम शिक्षा को प्रोत्साहित करने के लिए 615 नई एसटीईएम लैब में से 391 स्थापित की जा चुकी हैं। आगामी वर्ष में 250 अन्य विद्यालयों में 25 करोड़ रुपये की लागत से अटल टिंकरिंग लैब स्थापित की जाएंगी। विद्यार्थियों को वैश्विक स्तर पर सक्षम बनाने हेतु फ्रेंच के बाद अब जर्मन और जापानी भाषा शिक्षण की सुविधा भी दी जाएगी, जिसके लिए 100 शिक्षकों को प्रशिक्षित किया जाएगा।

खेल और आधारभूत सुविधाओं पर किया है बड़ा निवेश

उन्होंने कहा कि राजकीय विद्यालयों में खेल संस्कृति को सशक्त बनाने हेतु शेष 3,328 उच्च एवं वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों में खेल मैदान विकास के लिए 1 लाख रुपये प्रति विद्यालय का प्रावधान किया गया है। हरियाणा दिवस 1 नवम्बर 2026 तक सभी राजकीय विद्यालयों में ड्यूल डेस्क की व्यवस्था सुनिश्चित करने के लिए 200 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है। मुख्यमंत्री ने स्पष्ट किया कि वर्ष 2027-28 तक किसी भी सरकारी विद्यालय में कोई भी बच्चा टाट-पट्टी पर नहीं बैठेगा। 15 वर्ष पूर्व स्थापित 1,065 विद्यालयों की आईसीटी लैब को 50 करोड़ रुपये की लागत से नवीनीकृत किया जाएगा।

***प्रतिभा संवर्धन और नवाचार को मिलेगा बढ़ावा**

उन्होंने कहा कि 'सुपर 100' योजना के अंतर्गत अब तक 267 विद्यार्थियों ने आईआईटी, एनआईटी और मेडिकल कॉलेजों में प्रवेश पाया है। हालिया जेईई (मेन) परीक्षा में 314 में से 227 विद्यार्थियों ने उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की है। इस योजना की सीटें 400 से बढ़कर 500 की जाएंगी। 'कुशल बिजनेस चैलेंज' में 1.25 लाख विद्यार्थियों की 23 हजार टीमों ने भाग लिया, जिनमें से शीर्ष 66 टीमों को 1 लाख रुपये प्रति टीम की सीड मनी प्रदान की गई। यह योजना अगले वर्ष भी जारी रहेगी। मेधावी विद्यार्थियों को इसरो और डीआरडीओ जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों का भ्रमण कराया गया है, और आगामी वर्ष कक्षा 11वीं के 100 विद्यार्थियों को अंतरराष्ट्रीय शैक्षणिक भ्रमण पर भेजा जाएगा।

उच्च शिक्षा और कौशल विकास में नई पहल

उन्होंने कहा कि तकनीकी शिक्षा विभाग भविष्य-केंद्रित और इंडस्ट्री-अलाइनड पाठ्यक्रम शुरू करेगा। 5 राजकीय पॉलिटेक्निक संस्थानों में सप्ताहांत/सायंकालीन कोर्स प्रारंभ होंगे, जिससे युवाओं को नौकरी के साथ अतिरिक्त योग्यता प्राप्त करने का अवसर मिलेगा।

उच्च शिक्षा विभाग द्वारा आर्थिक रूप से कमजोर विद्यार्थियों को विशेष वित्तीय सहायता देकर जुलाई 2026 सत्र से राजकीय महाविद्यालयों में प्रवेश दिलाने का प्रस्ताव है। इंटर्नशिप, अप्रेंटिसशिप और प्लेसमेंट के लिए एक एकीकृत डिजिटल पोर्टल विकसित किया जाएगा। 10 करोड़ रुपये की लागत से उच्च शिक्षा गुणवत्ता एवं अनुसंधान उत्कृष्टता कोष स्थापित किया जाएगा, जबकि हरियाणा राज्य अनुसंधान कोष को अतिरिक्त 20 करोड़ रुपये प्रदान किए जाएंगे।

*** एआई एवं डिजिटल कॉलेज की ऐतिहासिक पहल**

उन्होंने कहा कि भविष्य विभाग और उच्च शिक्षा विभाग के सहयोग से एक स्वागत-टू एवं डिजिटल कॉलेज शुरू किया जाएगा, जहां शिक्षण और मूल्यांकन एआई आधारित प्रणालियों से संचालित होंगे। पायलट सफल होने पर अगले वर्ष 10 और ऐसे कॉलेज स्थापित किए जाएंगे।

*** 'वीर बाल मेमोरियल इनिशिएटिव' योजना**

उन्होंने कहा कि वीर बाल दिवस से प्रेरित होकर 6 करोड़ रुपये की लागत से 'वीर बाल मेमोरियल इनिशिएटिव' योजना शुरू की जाएगी।

दुर्घटना में विद्यार्थी की मृत्यु होने पर परिवार को 5 लाख रुपये तथा दिव्यांगता की स्थिति में 3 लाख रुपये की सहायता दी जाएगी। मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी ने कहा कि यह बजट विकसित भारत @2047 के लक्ष्य की दिशा में हरियाणा को शिक्षा, कौशल और अनुसंधान के क्षेत्र में अग्रणी राज्य बनाने का मजबूत रोडमैप प्रस्तुत करता है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि इन ऐतिहासिक निर्णयों से हरियाणा का मानव विकास सूचकांक नई ऊंचाइयों को प्राप्त करेगा।